निष्कर्ष एवं सुझाव

किसी भी शोध की पूर्ण सफलता तब कही जा सकती है जब उस शोध कार्य का निष्कर्ष व्यवस्थित और क्रमबद्ध ढंग से किया गया हो और शोध प्रश्न के आधार पर सुजाक प्रस्तुत किया जाए अतः प्रस्तुत शोध विषय को गहराई से समझ कर उसके विभिन्न आंकड़ों एवं तथ्यों को एकत्रित करके उनका विश्लेषण एवं वर्गीकरणकिया गया है। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का संकलन करने के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों को समान अनुपात में चयनित किया गया है। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का उपयोग कर प्रश्नावली द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया है। चक दे इंडिया, मैरी कॉम, दंगल फिल्मों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है। फिल्म समीक्षकों का साक्षात्कार लिया गया है। इन तमाम आंकड़ों के विश्लेषण एवं तथ्यों से जो निष्कर्ष निकले हैं, वे निम्नलिखित है-

- अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों एवं तथ्यों के अनुसार खेल केंद्रित फिल्मों से समाज की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। समाज ने अपनी पुरानी सोच को छोड़कर महिलाओं के प्रति संवेदनशील हो ने लगा हैं तथा महिलाओं को आगे आने के मौके मिलने लगे हैं।
- फिल्में संचार का सशक्त माध्यम होती है और सामाजिक बदलाव में सहायक होती है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार खेल केंद्रीत फिल्मों का समाज की मानसिकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। फिल्मों के माध्यम से फिल्मकार जो संदेश देना चाहते हैं उस संदेश को समाज ग्रहण करता है तथा उस संदेश का पालन करता है।
- वर्तमान में महिलाएं करियर के हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है, चाहें वह किसी भी क्षेत्र आर्मी, विज्ञान, आईएएस, आईपीएस सरकारी नौकरियों में महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार यह निष्कर्ष निकलता है कि खेल केंद्रित फिल्मों का समाज पर ज्यादा प्रभाव पड़ता है।
- प्राप्त आंकड़ों के अनुसार खेल केंद्र फिल्म में महिलाओं के विकास में अपना पूर्ण योगदान निभाती हैं। महिलाओं की सोच में बदलाव आए हैं। जहां पहले महिला मानती थी कि वह पुरुषों के बराबर

शारीरिक एवं मानसिक कार्य करने हेतु दक्ष नहीं है परंतु वर्तमान समय में महिला अपने सपने को पूरा करने हेतु आगे आ रही हैं तथा आज महिला अंतरिक्ष से लेकर आर्मी तक अपनी पहुंच बना चुकी हैं।

- प्राप्त आंकड़ों के अनुसार यह पता चला की खेल केंद्रित फिल्मों के माध्यम से युवाओं में खेल के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो रही है। युवाओं को खेल के बारे में जानकारी प्रदान करने में फिल्मों की एक बड़ी भूमिका होती है। नये-नये खेलों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारियां आसानी से प्राप्त होती हैं ,तथा खिलाड़ियों द्वारा किए गए संघर्ष का पता चलता है जिसके कारण युवाओं के अंदर आत्मविश्वास बढ़ता है।
- प्राप्त आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि खेल केंद्रित फिल्में खेल के विकास में सहायक होती हैं। सरकार , खेल अधिकारियों को खिलाड़ियों के समक्ष आने वाली समस्याओं के बारे में पता चलता है। युवा वर्ग इन फिल्मों के माध्यम से खेल के प्रति जागरुक होकर खेलों से अपना जुड़ाव बनाता है।
- आंकड़ों के अनुसार खेल आधारित फिल्मों से समाज जागरूक होता है। समाज की रूढ़िवादी सोच में बदलाव आ रहे हैं। समाज अब महिलाओं को पुरुषों के बराबर मौके देने लगा है जिससे महिलाएं समाज में आगे आ रही हैं और सामाजिक कार्यों में अपना पूर्ण योगदान दे रही हैं। वर्तमान समय में लड़के लड़कियों में होने वाला फर्क भी दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है। लड़कियों के खानपान, शिक्षा, पहनावे इत्यादि पर ध्यान दिया जा रहा है जिससे लड़कियों में आत्मविश्वास बढ़ रहा है तथा लड़कियां हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं।
- उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि खेल केंद्रित फिल्मों के प्रति उनकी अभिरुचि अन्य फिल्मों से ज्यादा है, क्योंकि इन फिल्मों में अश्लीलता नहीं होती है। इन फिल्मों को परिवार के सभी सदस्यों के साथ आसानी से देखा जाता है। यह फिल्म समाज परक होती है। इन फिल्मों में फिल्मकार द्वारा संदेश दिया जाता है यह संदेश समाज तथा परिवार के लिए महत्वपूर्ण होता है। ये फिल्में सामाजिक कुरीतियों, रूढ़िवादी सोच इत्यादि पर सीधे तौर पर प्रहार करती है और कहीं ना कहीं समाज को महिलाओं के प्रति अपनी सोच बदलने पर मजबूर करती है। लैंगिक असमानताओं

को कम करने में यह फिल्म बहुत ही सहायक होती है। इन फिल्मों के माध्यम से लड़कियां को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है जिससे लड़कियां शिक्षा के क्षेत्र में अब्बल आ रही है।

- उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि खेल केंद्रित फिल्मों में सर्वाधिक दंगल को पसंद किया गया। इस फिल्म में एक पिता समाज तथा गांव वालों से लड़कर अपनी बेटियों को कुश्ती जैसे खेल में आगे बढ़ाता है। गांव के लोगों यह सोचते है कि कुश्ती खेल महिलाओं के लिए नहीं है कुश्ती खेल को पुरुष ही खेल सकता है। महिलाओं में शारीरिक बल कम होता है जिसके कारण यह खेल महिला नहीं खेल सकती हैं। इस फिल्म ने समाज की सोच को बदला है तथा वर्तमान समय में महिलाएं सभी खेलों में अपना पूर्ण योगदान दे रही हैं। चक दे इंडिया, मैरी कॉम, दंगल फिल्म के कारण समाज की रूढ़िवादी सोच में बदलाव आ रहे है। समाज वर्तमान में महिलाओं को अपने सपने पूरे करने हेतु मौके देने लगा है। प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि इस प्रकार की फिल्मों को माता-पिता तथा घर के बड़े लोगों को ज्यादा से ज्यादा देखनी चाहिए। जिससे लड़कियों के प्रति उनकी सोच में बदलाव आए तथा लड़कियों को लड़कों के बराबर समझ कर उन्हें पर्याप्त मौके मिलने लगे हैं। महिलाएं समाज में आगे आ रही हैं तथा अपने सपने को पूर्ण करने के लिए प्रेरित हो रही हैं।
- प्राप्त आंकड़ों के अनुसार खेल केंद्रित फिल्मों के कारण समाज की रूढ़िवादी सोच पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। समाज अपनी मानसिकता को महिलाओं के प्रति बदल रहा है तथा महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने लगा है। समाज में आए बदलाव का मुख्य कारण ये फिल्में हैं। फिल्मों के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों से होने वाली समस्याओं के बारे में पता चलता है, तथा समाज को सोचने पर मजबूर करता है समाज अपनी रुढ़िवादी सोच को बदले। इन फिल्मों के कारण समाज, माता-पिता लड़की-लड़कियों में भेदभाव करना कम कर दिया है। वर्तमान में बेटियों को बेटों के बराबर समझा जाता है अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह फिल्म समाज में लैंगिक असमानताओं को कम करने हेतु सहायक होती हैं।

निष्कर्षतः देखा जाए तो कुल मिलाकर यह परिणाम सामने आए हैं कि वर्तमान में फिल्मों का समाज से गहरा नाता है। लोग फिल्मों को मनोरंजन के साधन के रुप में ही नहीं देखते हैं। बल्की फिल्मों से लोगों को

विभिन्न प्रकार की जानकारियां भी प्रदान होती हैं। फिल्मों के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों के बारे में पता चलता है तथा उन कुरीतियों को दूर करने के लिए प्रेरणा मिलती है। खेल केंद्रित फिल्में समाज की रूढ़िवादी सोच पर प्रहार करती हैं तथा लोगों को रूढ़िवादी सोच में बदलाव लाने हेतु प्रेरित करती है। जिससे इस सोच को बदल कर समाज को एक नई दिशा मिलें।

सुझाव

वर्तमान समय में फिल्मों की दुनिया में खेल केंद्रित फिल्म अपना विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान रखती है। फिल्मों के अंतर्गत आज के समय में काफी बदलाव आए हैं। जिसमें सिनेमेटोग्राफी, पटकथा, कैमरा वर्क,एनिमेशन का अच्छा उपयोग करके फिल्मों को ज्यादा से ज्यादा बेहतर बनाया जा रहा है। वर्तमान समय में दर्शकों को लुभाने के लिए एक अच्छी पटकथा में समाज से जुड़ी समस्याओं कुरीतियों इत्यादि को जोड़ा जा रहा है। जिसके कारण ज्यादा से ज्यादा दर्शक फिल्मों के प्रति आकर्षित हो तथा समाज, समाज से जुड़ी समस्याओं ,कुरीतियों के बारे में जागरूक होता है तथा इन कुरीतियों को दूर करने हेतु आगे आने की कोशिश करता है। तथा समाज को नई दिशा में ले जाने का कार्य करता है।

शोधार्थी के अनुसार खेल केंद्रित फिल्मों के द्वारा पड़ने वाले प्रभाव को मजबूत बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं-

- फिल्मों के प्रसारण होने का क्षेत्र सीमित है। प्राय: बड़े शहरों, कस्बों इत्यादि जगहों तक ही फिल्मों का प्रसारण हो पाता है। गांव, देहात के लोग फिल्मों का फायदा नहीं उठा पाते हैं अतः फिल्मों के इस सीमित क्षेत्र को बढ़ाकर फिल्मों का प्रसारण गांव, ढाणी, देहात तक होना चाहिए जिससे इन फिल्मों का फायदा ग्रामीण लोगों को भी मिल सकें।
- प्राय: फिल्में सिनेमा हॉल, टी.वी , इंटरनेट, मोबाइल इत्यादि के माध्यम से देखी जाती हैं। जिन लोगों के पास यह सुविधा उपलब्ध नहीं होती है वे इस प्रकार की फिल्म देखने से वंचित रह जाते है, अतः सरकार की ओर से विशेष स्थानों पर प्रोजेक्टर के माध्यम से इस प्रकार की फिल्मों को दिखाना चाहिए।

चौपालों इत्यादि जगहों पर भी इन फिल्मों को दिखाने की व्यवस्था करनी चाहिए। जिससे उन लोगों को भी इन फिल्मों को देखने का अवसर प्रदान हो जिनके पास अभी भी सुविधाओं का अभाव है।

- सरकार की ओर से समाज परक फिल्में जो समाज की कुरीतियों एवं बुराइयों पर प्रहार करती है। ऐसी फिल्मों को टैक्स फ्री करना चाहिए जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग इन फिल्मों को देख सकें तथा कुरीतियों और बुराइयों को दूर करने हेतु अग्रसर हो सकें।
- विद्यालयों और महाविद्यालयों में समय-समय पर खेल केंद्रित फिल्मों को सभी विद्यार्थियों को दिखाना चाहिए खासकर की लड़कियों को क्योंकि कहीं ना कहीं आज भी भारत महिला खेल में पीछे हैं। अतः खेल केंद्रित फिल्मों को विद्यालय और महाविद्यालयों में दिखाना चाहिए जिससे पढ़ने वाले विद्यार्थियों को खेल तथा खिलाड़ियों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्राप्त हो सके तथा विद्यार्थियों में खेल के प्रति आगे बढ़ने की ललक पैदा हो सकें।
- खेल केंद्रित फिल्में महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा देखनी चाहिए जिसके कारण महिलाएं जागरूक हो सके तथा महिलाओं के अंदर आत्मविश्वास पैदा हो सकें।